दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जुलाई-2026

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब ✿ बानी

वर्ष–चौबीसवां	अंक–तीसरा	जुलाई–2026

2 मैंनूं छड्ड के कल्ली नूं तुर चल्लेया

3 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
दया के सागर

9 परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
मेरे प्यारे सतगुरु सावन शाह

11 सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
मन का मनका

21 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
तड़प

29 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया गया संदेश
भजन गाना भी अभ्यास से कम नहीं होता

31 किड्स कॉर्नर
एकलव्य की गुरु भक्ति

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग :**सुखपाल कौर नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 292 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

मैनूं छड्ड के कल्ली नूं तुर चल्लेया

मैनूं छड्ड के कल्ली नूं तुर चल्लेया, ते मेरे पल्ले की रह गया x2

1. फुल्लां नालों कूलेया, बहारां नालों प्यारेया,
आजा इक वारी मेरे दिल दे सहारेया,
आवीं वैदा दुखड़े हटान वालेया,
गल्ल सुण जावीं माहीं मेरे जाण वालेया, ते मेरे पल्ले .....

2. दस्स मैनूं किन्नें तैनूं कित्ता मजबूर वे,
केड़ी गल्लों प्यारेया वे चला मैत्थों दूर वे,
होके अपना ते गैरां संग रल्लेया, ते मेरे पल्ले .....

3. मुख चन्न जेहा मेरे वल्लों मोड़ के,
मैनूं गमा दे चनाह विच रोड़ के,
दस्स जिंदगी गुजारां किवें कल्लेया, ते मेरे पल्ले .....

4. तेरे राहां विच राह बण गईयां ,
मुक जाण वाला साह बण गईयां,
की लब्भया बणा के मैनूं झल्लेया, ते मेरे पल्ले .....

5. मैनूं प्यार दे चबारे ते चढ़ा के,
पौड़ी खिच लई तूं अक्खियां मिला के,
जदों याद तेरी औंदी दिन ढल्लेया, ते मेरे पल्ले .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

दया के सागर

आस्ट्रेलिया

हाँ भई, परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हम पर अपरम्पार दया की, हमें अपनी भक्ति करने का मौका दिया। जब हम अपने आपको दुनियावी बातों से दूर कर लेते हैं और गुरु के कहे अनुसार अपना ध्यान दोनों आँखों के पीछे लेकर आते हैं तब हम गुरु की दया को जान पाते हैं कि गुरु ने हमारे लिए क्या किया है।

जब हम दुनियावी चीजों से ऊपर उठते हैं और अपने आपको उस आवाज़ के साथ जोड़ते हैं जो परमपिता परमात्मा ने हमारे अंदर पैदा की है तभी हम समझ सकते हैं कि हम भूले हुए थे। हमारे प्यारे गुरु इस दुनिया में हमारे साथ आकर रहे और उन्होंने हमें हमारे असली घर के बारे में बताया कि हम पागलों की तरह इस दुनिया में कष्ट उठा रहे हैं।

गुरु **दया के सागर** हैं, हमारे ऊपर बहुत दया करते हैं। वे हमें हमारे असली घर वापिस ले जाते हैं, जब हम अंदर जाते हैं तभी गुरु के बड़प्पन और दया को समझ सकते हैं। हम कहते हैं कि हम गुरु के पास जाते हैं, हमने उनसे 'नामदान' भी लिया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब आप दुनियावी चीज़ों को छोड़कर अंदर जाते हैं तभी समझ सकते हैं कि कौन आपको सतसंग में लेकर आता है और किसने आपको नामदान के लिए चुना है? जब हम अंदर जाते हैं तो हमें सच्चाई का पता चलता है कि वे गुरु थे जिन्होंने हमें चुना, वही हमें सतसंग में लेकर आते हैं।''

गुरु अर्जनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे परमात्मा, अगर यह हमारे हाथ में होता तो हम आपसे बिछुडक़र रोते क्यों फिरते? हमें पता नहीं कि

हम कितने जन्मों से आपसे बिछुड़कर दुखी हो रहे हैं।'' महाराज कृपाल अक्सर कहा करते थे, ''सच्चाई का कभी बीज नाश नहीं होता।''

ऐसा नहीं कि जिन्हें 'नामदान' मिल गया है, वे सभी प्रेमी बाहर भटक रहे हैं कोई अंदर नहीं गया। संगत में ऐसे बहुत से प्रेमी हैं जो अंदर जाते हैं, बहुत भजन-अभ्यास करते हैं, उन्हें देखकर बहुत खुशी होती है। ऐसे प्रेमी जिन्हें अंदर गुरु की थोड़ी सी झलक मिली है अगर किसी तरह उन पर बिछोड़े का समय आता है तो उनसे पूछें कि उनकी क्या हालत होती है?

वे आत्माएं पवित्र और भाग्यशाली होती हैं जो गुरु के शारीरिक रूप में रहते हुए ही अपने अंदर शब्द को प्रकट कर लेती हैं। मैं अपने प्यारे गुरु के यश और शान के बारे में क्या कहूँ। आप बुढ़ापे में भी अपनी सेहत की परवाह किए बिना बहुत दूर-दूर अपनी आत्माओं की खोज में गए और उन आत्माओं को नाम का अमृत पिलाया।

मैं यहाँ आपको कहानियाँ सुनाने के लिए नहीं आया हूँ, यह याद करवाने के लिए आया हूँ कि कृपाल क्या थे और मुझे उनसे क्या मिला। मैं यहाँ आपके साथ वह प्यार बाटँने आया हूँ जो मुझे उस प्रेम के सागर से मिला। मैं आपको यहाँ यह बताने के लिए आया हूँ कि **दया के सागर** प्यारे गुरु कृपाल कितने विशाल हैं।

मुझे बचपन से जब भी मौका मिला, मैंने अपना समय परमपिता परमात्मा की खोज और याद में बिताया। मैं हमेशा सोचता कि वे कैसी आत्माएँ थी जिन्हें पूर्ण गुरु से मिलने का मौका मिला और उन्होंने वही किया जो गुरु ने उन्हें करने के लिए कहा।

मैंने अपने जीवन में जिस तरीके से भक्ति की, मैं आपको यही बताने आया हूँ और आपसे भी वही भक्ति करवाने आया हूँ। मैं आपको यहाँ होटल में ले जाने या बाहर सैर करवाने के लिए नहीं आया हूँ। मैं आपको अपने प्यारे गुरु कृपाल के घर ले जाने के लिए आया हूँ। मुझे जो प्यार

उनसे मिला, मैं वह प्यार आपसे बाटँने आया हूँ। मैं आशा करता हूँ कि आप सब याद रखेंगे कि हम यहाँ क्यों आए हैं, हमारा यहाँ आने का क्या मकसद है। आप हमेशा उस मकसद के लिए अपना समय देंगे।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने भक्ति की है वही आपसे भक्ति करवा सकता है। यह करने की बात है कहने की नहीं।''

गुरुनानक साहब कहते हैं, ''आज तक किसी ने बातों से परमात्मा को नहीं पाया। हम जब तक अभ्यास न कर लें तब तक अंदर नहीं जा सकते, हमें शान्ति नहीं मिल सकती।''

अगर कोई आर्मी जनरल अपनी बहादुरी का अहंकार करे और कहे कि मैं यह लड़ाई तभी जीत सकता हूँ जब सामने फौज न हो, आप अच्छी तरह समझ सकते हैं कि यह उसकी कैसी बहादुरी है। जब वह जंग के मैदान में लड़ने के लिए निकला है तो उसे सामने वाली फौज का सामना करना ही होगा।

इसी तरह हम इस जंग के मैदान में उतरे हैं, जब हम इस मैदान में आते हैं तो काल की सभी शक्तियां हमारे सामने आती हैं। असल में काल की ये शक्तियां परमात्मा ने खुद ही बनाई हैं। उन्होंने हमें इस लड़ाई के लिए चुना है। उन्होंने हमें 'नामदान' दिया है, वह हमारा इम्तिहान लेना चाहते हैं कि हम कितने बहादुर हैं।

हमें उस जनरल की तरह नहीं होना चाहिए जो कहता है कि सामने कोई फौज न हो। हमें काल की शाक्तियों की फौज का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हम इस जंग में अकेले नहीं हैं। गुरु ने हमें 'शब्द–नाम' का हथियार दिया है, वे हमेशा हमारे पीछे खड़े हैं। हमें जो भी चाहिए वे देने के लिए तैयार हैं। जब जंग होती है तो राजा हमेशा सेनापति के पीछे खड़ा होता है। उसे जो भी चाहिए वह सब मिलता है इसी तरह

जब हम इस जंग के मैदान में अपने मन और काल की शक्तियों से लड़ते हैं तब हमारे गुरु हमेशा हमारे पीछे खड़े होते हैं और हमें जो चीज़ चाहिए, हमारे बिना कहे हमें वे सब चीज़ें देते हैं।

हमें सदा याद रखना चाहिए कि जो जंग के मैदान में जाते हैं, उन्हें केवल मरने या मारने का ही पता होता है। जो जंग के मैदान में जाते हैं वे डरपोक नहीं हो सकते। हमें अपने गुरु से यह नहीं कहना चाहिए कि मैंने शराब पी ली, व्याभिचार किया या मैंने यह गलत काम किया है। अगर आप अपने आपको काल की शक्तियों की लहरों में बहने देंगें तो ये ताकतें आपको नीचे की ओर ले जाएँगी।

आप अपना ध्यान गुरु की ओर रखते हैं तो गुरु आपकी आत्मा को ऊपर ले जाऐंगे अगर फिर भी आप दुनियावी कामों, सुखों–दुखों और व्याभिचारों में फँसे हैं तो आप नीचे की ओर जा रहे हैं। जब हमने गुरु के चरणों की शरण ले ली है तो हमने काल की शक्तियों में नहीं बहना, हमेशा उनके साथ लड़ना है।

सदा याद रखें कि गुरु हमारे साथ हैं और सदैव हमारी मदद कर रहे हैं अगर हम दृढ़ विश्वास रखें तो हम निश्चित तौर पर यह जंग जीत जांएगे। इस जंग में जीत हासिल करने के लिए हमारे दिल में गुरु के लिए प्यार और विश्वास होना चाहिए। अगर हमारे पास ये सब चीज़े नहीं हैं तो हम इस जंग को नहीं जीत सकते।

महाराज सावन सिहं जी कहा करते थे, ''शिष्य की भी कुछ ड्यूटी होती है, गुरु हमेशा अपनी ड्यूटी निभाने के लिए तैयार रहते हैं। दो लोग ही किसी कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं। इसी तरह अगर शिष्य अपनी ड्यूटी निभा रहा है तो कार्य हो जाएगा क्योंकि गुरु अपने हिस्से का काम हमेशा करते हैं लेकिन कभी–कभी शिष्य अपने हिस्से की ड्यूटी निभाने

में आलसी हो जाता है।'' महाराज सावन सिंह जी यह भी कहा करते थे कि कुछ लोग यह सोचते हैं कि गुरु हमें अपने आप ही मुक्ति दिलवा देंगे।

लद्द वी दे, लद्देन्दा वी दे, लद्दनवाला वी घरों दे।

यह इस तरह है जैसे कोई आदमी न केवल सामान माँगता है, सामान उठाने वाली गाड़ी भी माँगता है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए यह हमारे मन की कमज़ोरी है, हमारा मन हमें अपने हिस्से की ड्यूटी नहीं करने देता।

जो विद्यार्थी स्कूल जाता है, अपना पाठ याद करता है और टीचर के कहे अनुसार सब कुछ करता है वही अपने टीचर को खुश कर सकता है। अगर वह अपने आपको बुरी आदतों में फँसा लेता है, स्कूल नहीं जाता, पाठ याद नहीं करता तो वह अपने टीचर को कैसे खुश कर सकता है?

हमने जिस लग्न और प्यार से गुरु से 'नाम' लिया है, हमें वह प्यार हमेशा बनाए रखना चाहिए। प्यार और लग्न के कारण ही हमारे हृदय में 'नामदान' लेने की प्रेरणा पैदा होती है। जैसे पहले हमारे अंदर लग्न थी, नामदान मिलने के बाद हमारा मन हमारे और गुरु के बीच आ जाता है, यह हर तरह की रूकावटें खड़ी कर देता है।

यह मन कभी-कभी प्यारा दोस्त बनकर आता है और हमें गुरु की राह पर चलने से रोकता है अगर हम इसकी बातों में नहीं आते तो मन हमारा दुश्मन बन जाता है। यह मन हमें कभी-कभी डराता है, हर तरह की मुसीबतें खड़ी कर देता है और किसी तरह हमें गुरु से दूर ले जाता है। हमनें एक फौजी की तरह इन काल की शक्तियों का सामना करना है अगर आप इस राह में सफल होना चाहते हैं तो आपको हमेशा प्रेम, प्यार और लग्न बनाए रखनी चाहिए।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर प्रेमी प्रेम और लग्न को बरकरार रखे उसकी मुक्ति तो हो ही जाती है और वह लाखों आत्माओं को मुक्ति दिलवा सकता है।'' गुरु नानकदेव जी ने भी यही कहा है, ''गुरुमुख,

'नाम' की एक छोटी सी चिंगारी से लाखों आत्माओं को मुक्ति दिलवा सकते हैं।'' हमारे अंदर जो प्यार और विश्वास नामदान के समय था, उसे बनाए रखना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि आप यहाँ आने का मकसद याद रखेंगे, वह काम करेंगे जिस काम के लिए आप यहाँ आए हैं। यह छोटा सा कार्यक्रम आपके काम आएगा। हम जो भी श्वास और पल गुरु की भक्ति में बिताते हैं, उस हर एक श्वास और पल का हिसाब रखा जाता है। वह **दया के सागर** सदा दया ही करते हैं।

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

मेरे प्यारे सतगुरु सावन शाह

सन् 1955

महापुरुष आत्माएं सदा ही इस सुनसान संसार में आती रहती हैं, संसार ऐसी हस्तियों के बगैर कभी खाली नहीं रहा। पूर्ति और माँग का नियम हमेशा ही अस्तित्व में रहता है। भूखे के लिए रोटी और प्यासे के लिए पानी उपलब्ध है।

हमारे प्यारे सावन श्रावण (जुलाई) महीने में बरसाती बादलों की तरह इस संसार में आए और उन लोगों के दिलों को जीवित कर गए जो इस जीवन के विषयों द्वारा मुरझा गए थे। युगों–युगों से जो रूहें परमात्मा से बिछुड़ी हुई थी, आपने उन्हें वापिस परमात्मा से मिलाप के रास्ते पर डाला। आप समस्त संसार के लिए आए थे, आपने सभी भेदभाव मिटा दिए और सबको परमात्मा के चरणों में एक साँझे मंच पर लाकर खड़ा कर दिया। आपने लोगों को पक्षपात व संकीर्ण मानसिकता के गहरे गड्ढे से निकालकर इंसान के भाईचारे व परमात्मा के पित्रभाव का महान सबक सिखाया।

सतगुरु वह हैं जो जाति व धर्म के भेदभाव के बिना सभी मानव जाति को परमात्मा के प्यारों के एक साँझे खेमे में ले आते हैं। उन्होंने सतगुरु की परिभाषा को पूर्ण रूप से साबित किया। वे परमात्मा की ज्योति के जिस्मानी स्वरूप थे और उन्होंने समस्त संसार को प्रकाश दिया। उन्होंने नास्तिकों व काफिरों को भी परमात्मा का प्रकाश दिखाया। जो कोई भी उनके पास आया आपने उसे प्रत्यक्ष अनुभव दिया।

जो लोग अपने आपको शरीर मानते थे, वे जब आपके पास आए तो आपने उन्हें शरीर से ऊपर उठने का प्रत्यक्ष अनुभव दिया। सावन निसंदेह परमात्मा रूप थे, परमात्मा की दया उनके जरिए चमकती थी। आप एक ऐसा स्तंभ थे जिनके द्वारा परमात्मा कार्य करते थे।

जिसने भी आपके दर्शन किए, जिसे आपके साथ बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और जिसने भी आपके प्रेरणादायक वचन सुने वह आप पर मोहित हो गया। जो भाग्यशाली पूर्ण भक्तिभाव से आपके चरणों में बैठा वह शारीरिक वातावरण को भूलकर सबसे प्यार करने लग गया।

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साध संगत मोहे पाई।
न को बैरी न ही बैगाना, सगल संग हम को बन आई।

ऐसा भी वक्त था जब सभी किस्म के स्त्री-पुरुष आपके आस-पास होते थे, वे जब मधुर भक्ति भाव में बैठे होते थे तो उनकी पवित्र मौजूदगी के चुम्बकीय प्रभाव से इतने प्रभावित होते थे कि वे यह भी भूल जाते थे कि उनके आस-पास कौन बैठा है। अपनी ग्रहणशीलता के अनुसार हर एक को विभिन्न रंगों में आपके नूरी स्वरूप के दर्शन होते थे।

आप जबरदस्त शान के मालिक थे। आपको इस धरती पर विचरते हुए बहुत लोगों ने देखा लेकिन जो आप सच में थे उन्हें उस तरह देखने वाले बहुत थोड़े लोग थे। आप रूहानियत के नूरी सूर्य थे और आपने सच के खोजियों को ज्योति प्रदान की। जीवित महापुरुष के चरणों में रहना निसंदेह एक महान आर्शिवाद है। जब एक पूर्ण महात्मा किसी श्रदालु को नामदान देते हैं तो वे सदा उसके अंदर बस जाते हैं और उसे हर मुनासिब सहायता प्रदान करते हैं।

हुजूर सावन सिंह जी महाराज अभी भी हमारे साथ हैं। हमने उनके प्रति अपनी श्रद्धा नहीं बदलनी अगर किसी भाई-बहन को रूहानियत में कोई दिक्कत पेश आ रही है तो वह किसी कमाई वाले गुरु भाई की मदद से उसे दूर कर सकता है और अंतरी मंडलों में हुजूर से मिल सकता है।

आज के दिन हमें उनकी याद में क्या करना चाहिए? आओ, उन्होंने अपने जीवनकाल में हमें जो सबक सिखाए थे, हम उन पर अमल करें ताकि हम उनकी अनन्त मौजूदगी में दाखिल हो सकें। ***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मन का मनका

17 मार्च 1977 | कबीर साहब की बानी | 77 आर.बी. राजस्थान

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

आम लोग सिमरन करने के लिए माला रखते हैं लेकिन सन्तमत में माला को कोई अहमियत नहीं दी गई है। कबीर साहब कहते हैं कि चाहे आप युग भर माला फेरते रहें लेकिन मन नहीं फिरता। आप हाथ से जो मनके फेरते हैं उन्हें गिरा दें। आपको सतगुरु जो सिमरन देते हैं आप उसे बार-बार दोहराएं। जैसे हम एक, दो, तीन, चार, पाँच बार-बार बोलते हैं। बार-बार सिमरन दोहराना भी एक तरह का माला फेरना ही है।

माला के बारे में मैं कई बार अपना व्यक्तिगत तजुर्बा बताया करता हूँ, मैं काफी साधुओं के पास गया। जैसा-जैसा किसी ने मुझे बताया मैंने वैसा ही किया। मैंने जब धुनियाँ तपाई उस वक्त मुझे चौबीस हज़ार जाप बताया गया था, चाहे वह जाप पांच घंटे में हो चाहे दो घंटे में हो।

आमतौर पर धुनियाँ मई-जून के महीने में तपाई जाती हैं। हिन्दुस्तान में मई-जून के महीने बहुत तपिश वाले होते हैं। धूनी दोपहर के समय शुरु की जाती है, उस समय सूरज बिल्कुल शिखर पर होता है। चारों तरफ आग जलाई जाती हैं और बीच में बैठना पड़ता है। सिर्फ आँखों के बचाव के लिए थोड़ी-सी पानी की पट्टी रखनी पड़ती है, बाकी जिस्म को पूरा ताप लगता है। मुझे चौबीस हजार जाप बताए गए थे लेकिन मैं अड़तालीस हजार जाप करता था क्योंकि मेरे अंदर सच्ची लगन थी। दिल में यह ख्याल था कि देखना है यह साधन कहाँ तक प्रफुलित होता है या इसकी कितनी वैल्यू है।

हमारे गाँव में उस साधु के काफी चेले थे, उसने शर्त रखी कि मैं तुझे रब तो दिखा सकता हूँ लेकिन मैं रोटी तेरे घर से खाऊंगा। मालिक ने बहुत कुछ दिया हुआ था तो मैंने कहा, ''बाबाजी मैं बहुत खुश हूँ, बेशक आप साल बैठे रहें या सारी जिंदगी भी बैठे रहें तो भी कोई बात नहीं।'' अब हमें पता ही है कि मन एक जगह कहाँ टिकता है?

एक जगह तो एक किस्म का ही खाना मिलता है अगर बारी–बारी से लोगों के घरों में जाएंगे तो कोई हलवा बनाता है तो कोई खीर बनाता है। अब उस बाबा का दिल खुश नहीं हुआ। वह लोगों के घर खाने लग गया। मैंने अर्ज की, ''बाबाजी, आप अपने प्रण से हिल रहे हैं।'' वह कहने लगा, ''देख भाई, हमारा तो यह काम होता है, हम तो तुझे भगाने के लिए ये बात कह रहे थे। हमारा काम ऐसे नहीं चलता, किसी से हमारी बात नहीं करनी।'' मैंने कहा, ''मुझे आपकी बात करने की क्या जरुरत है?''

उस साधु ने मुझे माला फेरनी बताई थी, माला फेरते वक्त मेरी माला एक हफ्ते में टूट जाती थी। उन दिनों माला पच्चीस पैसे की आती थी। दिल में यह ख्याल आया कि मैं बिना वजह एक महीने में एक रुपए का नुकसान करता हूँ, यह ठीक नहीं है। इसलिए मैंने जूट की डोरी की माला बनाई ताकि जल्दी न टूटे। उन दिनों हाथों पर छाले पड़ गए थे लेकिन मन को कोई शांति नहीं मिली। मैंने यह तजुर्बा अच्छी तरह करके देखा है, मैं किसी की सुनी–सुनाई नहीं कहता। बाबा जल्लण जट्ट भी कहते हैं:

लोकां दियां जप मालीयां जल्लण दा जप माल।
सारी उम्र जपेंदेया इक ना खुथा वाल।

नौशेरा में जल्लण जट्ट लम्बी उम्र के बहुत मशहूर महात्मा हुए हैं, वे जमींदार थे। वे कहते हैं कि मैंने तो बड़ी सारी माला बनाई थी, लोगों की तो छोटी–छोटी माला थी। सारी उम्र माला जपते रहे लेकिन मन को शांति न मिली काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार कुछ भी कम नहीं हुआ। फिर दिल में यह ख्याल आया कि शायद ये मनके छोटे हैं और वे कहते हैं:

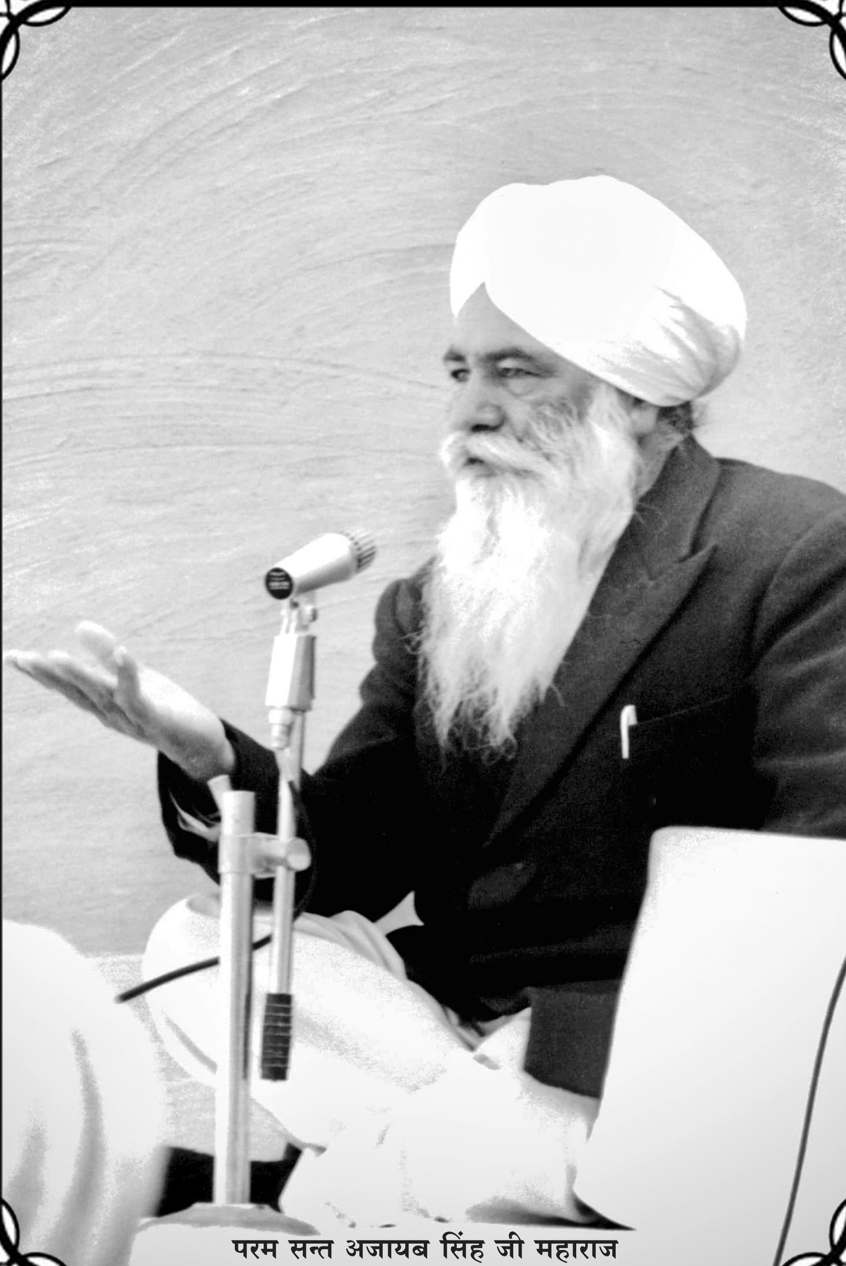

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

वड्डा कीकर वड के जप माल बनाया, उचे टिले बहके ठाह–ठाह वजाया।

आजकल तो कुएं में लोहे की बाल्टी को रस्सी से बाँध लेते हैं लेकिन उस जमाने में बाल्टी मिट्टी या लकड़ी की बनती थी। कुआं आमतौर पर जमीन के ऊंचे हिस्से में बनाया जाता है ताकि पानी नीचे सारी जमीन को लगे। बाबा जल्लण जट्ट कहते हैं, ''बबूल का पेड़ काटकर उससे बहुत बड़ी माला बना ली कि इससे रब जरूर मिलेंगे लेकिन इससे मन को कोई शांति नहीं आई बल्कि असल पूछें तो हाथ से जब मनका फेरते हैं तो ख्याल बाहर रहता है आमतौर पर हम रस्म–रिवाज बना लेते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हाथ वाला मनका गिरा दें और मन का मनका गुरु जो सिमरन बताते हैं, उसे जपें। वह सिमरन किसी वक्त न रूके। उठते–बैठते, सोते–जागते, मल–मूत्र करते, बस–गाड़ी में सफर करते हुए सिमरन करते रहें, यह सिमरन किसी वक्त टूटना नहीं चाहिए।''

कबीर माला काठ की, बहुत जतन का फेर।
माला स्वासों स्वास की, जा में गाँठ न मेर।।

आप कहते हैं, ''काठ, चन्दन या रुद्राक्ष की माला में एक मेरुदंड होता है, वहाँ गाँठ आ जाती है। वहां जाकर माला उलटनी पड़ती है। लेकिन मन की माला में कोई गाँठ नहीं होती, उसे उलटना नहीं पड़ता, उसकी सीधी चढ़ाई है।

बाहर क्या दिखलाइये, अंतर जपिये नाम,
कहा महोला खलक से, पड़ा धनी से काम।

हम दुनियादार गले में माला डालकर लोगों को दिखाते हैं या माला फेरते हुए लोगों को दिखाते हैं ताकि लोग कहें कि यह बहुत बड़ा भक्त है। आप कहते हैं कि दिखाएं तो तब अगर कोई अनजान हो। मालिक कोई अंधे, गूँगे या बहरे नहीं हैं। हम जो कुछ कर रहे हैं, वे जरूर देखते हैं।

मैं आमतौर पर कहा करता हूँ कि जब हम पुण्य करते हैं तो पंडित या भाई से वक्त पूछते हैं, तिथि या वार पर विचार करते हैं। भाई को बुलाकर लम्बी अरदास करवाते हैं लेकिन जब पाप करते हैं तब किसी से सलाह नहीं करते। माँ, बेटी से सलाह नहीं करती और बेटी माँ से सलाह नहीं करती कि मैं पाप करने लगी हूँ। दुनिया पाप और पुण्यों का बदला भोग रही है। पुण्य का बदला धनी परिवार में पैदा होना, अच्छा दिमाग होना यह मालिक की तरफ से पुण्य का इनाम है। गरीब घर में पैदा होना, बीमार रहना, बेरोजगारी में रहना यह पापों की सजा है। गुरु साहब कहते हैं:

विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि।।

वे बगैर बोले सब जानते हैं। आप आंखे बंद करके बैठ जाएं और दुनिया की तरफ से छिप जाएं। दुनिया से क्या वास्ता, क्या दुनिया हमारे साथ जाएगी या हमारी मदद करेगी? जब मालिक से मिलाप हो गया तो दुनिया कहाँ मदद कर सकती है। दुनिया का तो अपनी गरज का प्यार है। माँ भी लड़कों से कह देती है कि मुझे तुम्हारी चमड़ी प्यारी नहीं, तुम्हारा काम प्यारा है। जब माँ–बाप लड़के की शादी कर देते हैं तो वह अपने सब फर्ज भूल जाता है।

कबीर साहब कहते हैं कि आपने दुनिया से क्या लेना है? जब मालिक से मिलाप हो गया, रास्ता मिल गया फिर मालिक जाने और आप जानें। आप सिमरन करें, मालिक सब जानते हैं लेकिन हम क्या करते हैं अगर दो मिनट सिमरन किया तो शिकायत करते हैं कि मन नहीं टिकता। मन कैसे टिकेगा? दस घंटे दुनियादारी की और एक घंटा भजन किया। देख लें, कौन–सी साइड भारी है? तराजू में जो पलड़ा भारी होगा वही झुकेगा और भजन वाला ऊपर हो जाएगा।

चाहिए तो यह था कि दस घंटे भजन करें और थोड़ा टाइम दुनियादारी करें फिर देखें, कौन–सा पलड़ा भारी होता है अगर हम दस मिनट भी

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बैठेंगे तो अपने सामने घड़ी रख लेंगे और फिर लोगों से कहते है कि आज मैंने दो घंटे भजन किया है। यह हम किसी पर एहसान नहीं कर रहे, मालिक देख रहे हैं अगर हम दो मिनट बैठते हैं तो मालिक वह भी देखते हैं अगर हम एक घंटा बैठते हैं तो वह भी देखते हैं।

एक साधु के दो चेले थे। साधु ने सोचा, कहीं मेरे बाद ये झगड़ा न करें। मैंने इन्हें जो सबक सिखाया है, क्या ये उस राज के जानकार भी हैं? साधु ने उन्हें दो पक्षी देकर कहा, ''ये पक्षी ले जाओ और इन्हें ऐसी जगह पर कत्ल करके लाओ जहां कोई न देखे।''

एक चेला थोड़ा सा साइड में हुआ, उसने फ़ौरन पक्षी का गला दबाया और लाकर साधु को पकड़ा दिया। दूसरा चेला साधु के अंदरूनी राज का वाकिफ़ था। उसने अपनी आँखें बंद की और उस पक्षी की भी आँखें बंद की लेकिन उसका पर्दा अंदर खुला हुआ था, उसे मालिक हर जगह देखते हुए नजर आ रहे थे। वह दस-पंद्रह दिन बड़े यत्न करता रहा, उसे ऐसी कोई जगह न मिली जहां उसके गुरु नहीं थे क्योंकि जल में भी वे हैं और थल में भी वे हैं। उसने पक्षी लाकर साधु के पास भेंट किया और कहने लगा, ''महाराज जी, मुझे ऐसी कोई जगह नहीं मिली जहां मैं इसे कत्ल कर देता।'' साधु ने उसे पकड़कर अपनी छाती से लगा लिया और कहा, ''मैं अपना सब कुछ तुम्हें दूंगा।'' मालिक हर जगह देखते हैं। कोई ऐसी जगह नहीं जहां वे नहीं देखते। वे पहाड़ों में, पत्थरों में, पानी में हर जगह देख रहे हैं। उनकी नजर बड़ी तेज है, वे ऊंची जगह सच्चखंड में बैठे हैं।

सहजे ही धुन होत है, हरदम घट के माहिं।
सुरत सबद मेला भया, मुख की हाजत नाहिं।।

कबीर साहब कहते हैं कि माला हाथ से फेरनी है और दुनिया का सिमरन जुबान से करना है। सन्त दो किस्म का नाम बताते हैं: एक वर्णात्मक है और दूसरा धुनात्मक है। जिसे लिखा, पढ़ा और बोला जाए,

उसे वर्णात्मक नाम कहते हैं। यह भी चार प्रकार का है: परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। एक वह है जो हम धीरे–धीरे बोलते है। एक वह है जिस तरह हम अभी बोल रहे हैं, एक कंठ में धीरे–धीरे बोला जाता है। एक ह्रदय से, नाभि से योगी जन हिलौर उठाते हैं।

दूसरा धुनात्मक नाम है, यह लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। मुसलमान फ़क़ीर इसे कलमा, बांग–ऐ–आसमानी, नदा–ऐ–सुल्तानी कहते हैं। हिन्दू महात्मा इसे राम नाम, राम धुन और दिव्य धुनी कहकर बयान करते हैं। गुरु नानक देव जी ने भी इसे कई नामों से याद किया है जैसे हरि कीर्तन, राम नाम, शब्द, धुन, बानी, सच्ची बानी और अनहद बानी। कबीर साहब भी इसे नाम या शब्द कहते हैं।

सिमरन का तो इतना ही मतलब है कि शरीर से सुरत को नौ द्वारों से खाली करके आँखों के पीछे लाना है। सिमरन हमें इसके आगे नहीं ले जाएगा। आगे धुनात्मक नाम है जो किसी कौम, मज़हब या मुल्क का नहीं। किसी भी मुल्क का इंसान हो, स्त्री हो, मर्द हो, बच्चा हो, बूढ़ा हो, हर एक के अंदर यह धुनकारें दे रहा है। यह सच्चखंड से उठता है और हमारे माथे के बीचों–बीच धुनकारें दे रहा है। पैदाइश से लेकर मौत तक हर एक के अंदर अपने आप ही धुन हो रही है। इसे कोई बजाने वाला नहीं बजा रहा, वह मालिक की तरफ से हो रही है।

जब हम सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर उस शब्द को पकड़ते हैं फिर मुँह हिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। सुरत का शब्द के साथ मिलाप हो जाता है। सुनने वाली शक्ति को 'सुरत' कहते हैं फिर मुख हिलाने की ज़रुरत नहीं पड़ती हमेशा ही ख्याल ऊपर रहता है।

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवां तो दहु दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।

हम दुनियादार जो सिमरन करते हैं कबीर साहब उसके बारे में समझाते हैं हाथ में माला फिरती है और मुँह में जीभ फिरती है। हम जिस मन को समझाने में लगे हुए हैं, वह मन तो दस दिशाओं में फिर रहा है। यह कभी विषय–विकारों की लज्जत लेता है, कभी शराब–कबाब में फिरता है, कभी बच्चों में फिरता है, यह सारी दुनिया में फैला हुआ है। यह सिमरन मंज़ूर नहीं क्योंकि जिस मन को समझाना है, उसे भी हाजिर रखना है।

तन थिर मन थिर बचन थिर, सुरत निरत थिर होय।
कह कबीर इस पलक को, कलप न पावै कोय।।

हम जब कोई काम करते हैं तो सबसे पहले उसके बारे में सोचते हैं इसी तरह जब भजन करने के लिए बैठते हैं तो सबसे पहले अपने तन को ठीक करके बिठाना है। न तो इसे इतना आराम में बिठाएं की नींद आ जाए और न इतना सख्त करके बिठाएं कि हम ज़्यादा देर तक बैठ न सके। हमें हिलना–डुलना नहीं चाहिए अगर भजन में बैठे हुए आसन बदलते रहेंगे तो रस नहीं आएगा, ऊपर नहीं चढ़ेंगे।

सबसे पहले तन थिर, तन को हिलने डुलने से टिकाना है फिर मन थिर, मन को सिमरन में लगाना है और बचन थिर करना है। जब हमारी यह तीन चीजें टिक जाती हैं तो हमारी सुरत और निरत अपने आप ही टिक जाती हैं। देखने वाली शक्ति को 'निरत' कहते हैं और सुनने वाली शक्ति को 'सुरत' कहते हैं अगर हमारी तीनों चीजें बन जाती हैं तो एक सेकंड का जपा हुआ नाम भी करोड़ों युग की भक्ति से बेहतर है। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं:

एक चित्त जिह इक छिन धिआइओ, काल फास के बीच न आइओ।

जिसका तन–मन और सुरत–निरत थिर हैं अगर वह एक सेकंड भी नाम जपे तो काल के दायरे से पार हो जाता है। वह खुश किस्मत है, जिसकी सुरत शब्द के साथ लगी है। अगर एक सेकंड भी लग गई, एक

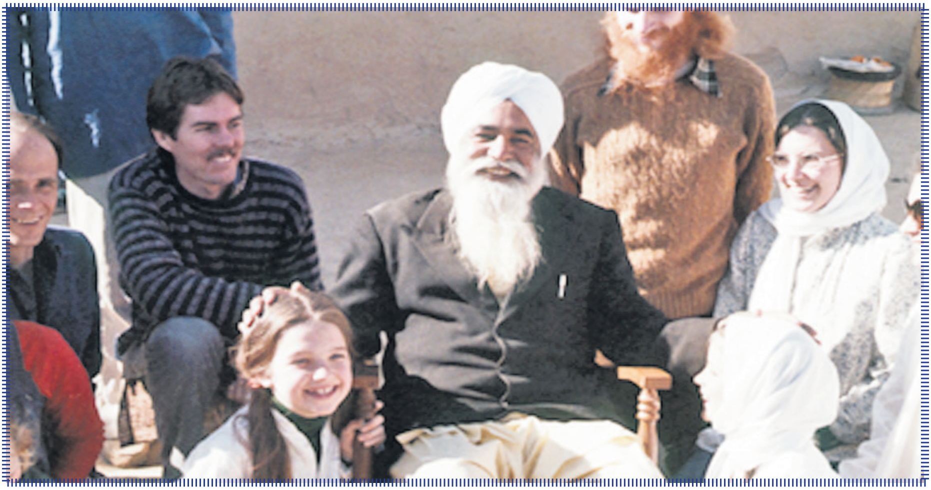

बार भी अटैच हो गई तो वह काल के फंदे से ऊपर चला जाता है। हम जब सिमरन करने बैठते हैं अगर हमारा तन आगे गिरे या पीछे गिरे या हम सो जाएं या हमें कोई ख्याल न रहे फिर हम किस तरह कामयाब हो सकते हैं?

जाप मरै अजपा मरै, अनहद भी मरि जाय।
सुरत समानी सबद में, ताहि काल नहिं खाय।।

कबीर साहब कहते हैं कि हम सिमरन को सब कुछ बनाए बैठे हैं। सबसे पहले जप मन की जुबान से किया जाता है, यह सिमरन आपको आँखों के पीछे तक ही पहुंचाएगा। इसके आगे नहीं ले जाएगा। इसके आगे अजपा है यह जप हमारे घट में हो रहा है, आपने उससे भी ऊपर जाना है। आगे अनहद शब्द आ गया जिसकी कोई हद नहीं, वह दिन-रात हो रहा है। आपने उसे भी छोड़ना है और ऊपर जाना है, आगे सुरत जाती है। जाप, अजपा और अनहद शब्द यह तीनों स्टेज छोड़कर जिसकी सुरत इनसे न्यारी हो जाती है और शब्द में मिल जाती है, वही काल से बचेगा।

जाकी पूंजी स्वास है, छिन आवै छिन जाय।
ताको ऐसा चाहिये, रहै नाम लौ लाय।। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

तड़प

DVD-615(2)

14 फरवरी 1997 सॉंपला–हरियाणा

एक प्रेमी: – *भजन गाते समय हमारे अंदर जिस तरह की तड़प होती है, सिमरन करते समय भी हम उस तरह की तड़प कैसे बना सकते हैं?*

बाबा जी: – परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम करके हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। परमात्मा कृपाल सदा यही कहा करते थे, ''शब्द तो सभी अच्छे होते हैं लेकिन पसन्द अपनी–अपनी आत्मा की होती है। जिस शब्द में आपकी ज्यादा रूचि है, भजन–सिमरन में बैठने से पहले उस शब्द को बोलें जिससे आपके अंदर **तड़प** पैदा हो।''

प्यारेयो, शब्द बोलते हुए जिस तरह हमारे अंदर तड़प बनती है, उस तड़प को कायम रखें बल्कि सिमरन के समय यह **तड़प** और भी बढ़ जानी चाहिए। शब्दों के जरिए हम गुरु के आगे नम्रता जाहिर करते हैं, अपनी कमियाँ बताते हैं और फरियादें करते हैं। सिमरन करते हुए सतसंगी को यह सोचना चाहिए कि मेरा गुरु मेरे पास है।

गुरु जब नाम देते हैं उस समय वह हमारे अंदर तीसरे तिल पर अपनी सीट बनाकर विराजमान हो जाते हैं। गुरु हमारी इंतजार में होते हैं अगर कोई हमारी इंतजार में हो तो क्या हम पीछे मुड़कर देखेंगे? अगर हमें उसके साथ सच्चा प्यार है तो हमारी कोशिश होगी कि वह हमारे सामने आए और हम उससे गले लगकर मिलें।

मैं बताया करता हूँ कि इश्क चाहे मिजाजी है चाहे हक़ीक़ी है दोनों में एक जैसी तड़प होती है अगर किसी का किसी के साथ मिजाजी इश्क है

तो उसे रात को नींद नहीं आती, उसकी आँखों के आगे वही मनमोहनी मूरत घूमती रहती है। जब वह उसे मिलता है तो वह उससे गले लगकर मिलता है। यही **तड़प** हक़ीक़ी इश्क में भी है अगर हमारा गुरु के साथ सच्चा लगाव है तो रात को हमारी आँखों के आगे वही मनमोहनी मूरत रहेगी, हमें नींद नहीं आएगी। हम सोचेंगे अगर वह मिल जाए तो मैं उससे यह बात करूँ, वह बात करूँ। प्रेमी अपने अंदर ताने–बाने ही बुनता रहता है।

मेरे पास कई लड़के–लड़कियाँ आकर अपने प्यार का इजहार करते हैं लेकिन कोई भाग्यशाली जीव ही गुरु के प्यार का इजहार करता है। ऐसा नहीं कि गुरु से प्यार का इजहार करने वाले हैं ही नहीं, मेरे पास ऐसे भी आते हैं जो तहे दिल से गुरु का शुक्राना करते हैं।

मैंने आपको कई बार ससी–पुन्नू की कहानी सुनाई है, यह कहानी मासिक पत्रिका में भी छप चुकी है। ससी के दिल में अपने दोस्त पुन्नू के लिए बहुत **तड़प** थी। ससी ने बारह साल तक न अच्छी तरह खाना खाया और न वह अच्छी तरह सोई। जब उसका मिलाप पुन्नू से हुआ तो वह सो गई और पुन्नू को कोई और उठाकर ले गया। अगर वह उसी तरह अपनी तड़प बनाए रखती, न सोती तो कोई पुन्नू को उठाकर न ले जाता। आखिर ससी पुन्नू के वियोग में मरूस्थल में रो–रोकर मर गई।

अगर आप अभ्यास में बैठने से पहले सिमरन में सुस्ती करेंगे तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आपके पुन्नू को छिपा लेंगे क्योंकि ये विरोधी ताकतें हैं और आपको आपके दोस्त से नहीं मिलने देंगे अगर आप उनके झांसे में आ गए तो हो सकता है कि आप भजन से उठकर काम–भोग में लग जाएं।

हमारी आगे जाने की इच्छा होनी चाहिए। हमें सिमरन के समय तड़प बढ़ानी चाहिए, दुनिया के बारे में नहीं सोचना चाहिए अगर हम सिमरन में आगे बढ़ते जाएंगे तो दोबारा इस दुनिया में हमारा जन्म नहीं होगा।

सोहणी ने देखा कि घड़ा कच्चा है उसे यकीन हो गया कि अगर मैं इसका साथ लेकर दरिया में जाऊंगी तो मेरी मौत निश्चित है। उसने सोचा कि इश्क बेदाग है मैं इसे दाग क्यों लगाऊँ। प्यारेयो, जिन्होंने गुरु घर में भी इश्क कमाया है उन्होंने दाग नहीं लगने दिया। जब सिमरन के समय हम मन में बुरे ख्याल उठाते हैं तो हम दाग ही लगा रहे होते हैं। हमारे गुरु तीसरे तिल पर बैठकर हमारी हरकतें देख रहे होते हैं। क्या हम अपने अंदर बुरे ख्याल उठाकर गुरु की बेअदबी नहीं कर रहे होते?

किसी दुकान पर चाहे छोटा सा बच्चा भी बैठा हो तो हम वहाँ से कोई सामान नहीं उठाते कि इंसान का बच्चा हमें देख रहा है। हम सोचते हैं कि हमारे गुरु हिन्दुस्तान में बैठे हैं या सोए हुए हैं, ऐसा सोचने वाले गुरु से क्या फायदा उठा लेंगे?

प्यारेयो, हमारे गुरु नज़दीक से नज़दीक है और हमारी हर हरकत को देख रहे हैं। पूर्व और पश्चिम में सन्तों के अनेक सेवक जब चोला छोड़ते हैं तो गुरु कहीं और बैठे होते हैं लेकिन चोला छोड़ने वाले गवाही देते हैं कि गुरु ने हमारी संभाल की।

महाराज सावन और महाराज कृपाल को चोला छोड़े हुए काफी समय हो गया है। जिन्होंने इन महान हस्तियों को देखा ही नहीं अगर उनके घर में कोई सतसंगी है, घर पर गुरु की बात चलती है तो वे भी जब चोला छोड़ते हैं तो इस बात की गवाही देते हैं कि उन्होंने भी गुरु पावर की मौजूदगी महसूस की है।

मैं जब पश्चिम और मुम्बई सतसंग करने के लिए जाता हूँ तो कई प्रेमियों के माता–पिता मुझसे मिलने आते हैं। वे आकर मुझसे कहते हैं, ''हम सिर्फ आपको देखने के लिए आए हैं, आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है।'' उनके दिल में कितनी **तड़प** होती है, क्या परमात्मा उसका फल नहीं देंगे? यह तो अपने–अपने बर्तन का सवाल होता है।

मैं तो आपको यही कहता हूँ कि चलते–फिरते, सोते–जागते, किसी से बातें करते हुए भी **तड़प** कम नहीं होनी चाहिए। आप सोते–जागते दुनिया की तड़प करते हैं तो आपको बुरे सपने आते हैं अगर आपमें गुरु की तड़प होगी तो आपको गुरु का सपना जरूर आएगा।

एक प्रेमी: *– भजन पढ़कर गाना बेहतर है या उस समय दर्शन करना बेहतर है क्योंकि दोनों ही जरूरी हैं। जिन्हें भजन याद नहीं वे तो किताब से पढ़कर ही गाते हैं।*

बाबा जी: – हमने बोलना जुबान से है और दर्शन आँखों से करने हैं। महाराज सावन सिंह जी दर्शनों की महानता के बारे में बताया करते थे कि ज्यादा लाभ दर्शनों का है क्योंकि परमात्मा सर्वव्यापक, अलख और अगम हैं, हम उनका ध्यान नहीं लगा सकते, उनसे मिल नहीं सकते। इंसान की इस कमजोरी को देखकर ही परमात्मा इंसानी जामें में आते हैं।

महाराज कृपाल ने मुझे निजी तौर पर बताया था कि एक बार वे और डॉक्टर जॉनसन महाराज सावन की टाँगे दबा रहे थे, उन्होंने महाराज जी से पूछा, ''अंदर किस तरह का दर्शन होगा?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''अंदर ऐसे ही नक्श होंगे जैसे आप अभी देख रहे हैं।''

जिन प्रेमियों का दर्शन पक चुका है, वे कहते हैं कि गुरु आ गए हैं। अगर उनको गुरु दिखाई देते हैं तभी वे ऐसा कहते हैं। बाहर का चेहरा इतना आकर्षक नहीं होता, अंदर का सूक्ष्म चेहरा बहुत तेज वाला होता है, वह चुम्बक की तरह खींचता है। जैसे–जैसे शिष्य अंदर जाता है, नूरी चेहरा सूक्ष्म से भी सुंदर है। गुरु की नजर आत्मा पर होती है। वह अभूल ताकत है, जिसे नाम देते हैं उसे कभी नहीं भूलते।

काल, सतगुरु की आत्मा को स्वीकार नहीं करता अगर कर भी ले तो सन्त नर्क में जाकर अपनी आत्मा को ढूंढ लेते हैं। अगर शिष्य की कोई निशानी नहीं होगी तो गुरु उसे कैसे ढूढेंगे? अगर सेवक का ध्यान पका

नहीं होगा तो वह गुरु के साथ कैसे आएगा, उसे कैसे यकीन होगा कि यह मेरा गुरु है इसने ही मुझे नाम दिया है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

गुरु का ध्यान कर प्यारे, बिना इसके नहीं छुटना।

गुरु अर्जनदेव जी महाराज कहते हैंः

गुर की मूरति मन महि धिआनु, गुर कै सबदि मंत्र मनु मान।

गुरु हमें जो मंत्र देते हैं, उसे जपें। उस मंत्र के आगे काल की ताकत नहीं ठहर सकती। गुरु के स्वरूप का ध्यान तीसरे तिल पर लाएं।

अकाल मूरति है साध सन्तन की, ठाहर नीकी धिआन कउ।

प्यारेयो, गुरु का स्वरूप काल के दायरे के पार से आता है। दुनिया का ध्यान तो बिना सोचे ही बनता रहता है, गुरु का ध्यान तीसरे तिल से नीचे नहीं बनता लेकिन हम एकाग्र नहीं होते इसलिए जुड़ नहीं पाते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी को उस जगह बैठना चाहिए जहाँ से उसे आसानी से गुरु के दर्शन होते रहें। जो पहले आता है वह आगे बैठे, जो बाद में आते हैं वे कभी भी दूसरे को उठाकर आगे बैठने की कोशिश न करें।'' आगे बैठने के लिए हम महाराज सावन के आने से पाँच-छह घंटे पहले आकर बैठा करते थे।

महाराज सावन सिंह जी का उपदेश बहुत सादा होता था। वे दो लफ़्ज़ो में ही सारी बात समझा देते थे। वे कहा करते थे, ''किसान की नज़र खेत के पिछले हिस्से की तरफ ज्यादा होती है। सतसंग ध्यान लगाने का बहुत अच्छा मौका है, सतसंग के समय आपकी निगाह पाठी की तरफ भी नहीं जानी चाहिए।'' कबीर साहब कहते हैंः

साधु का निरख आँख और माथा, सत का नूर रहे नित साथा

जो लोग सतसंग में टिकटिकी लगाकर देखते हैं, वे बहुत कुछ देखते हैं और उन्हें अच्छे तजुर्बे भी होते हैं। इसलिए आप भजन बोलने की

प्रैक्टिस पहले कर लें ताकि आपको किताब का सहारा ज्यादा न लेना पड़े। किताब आगे रखकर थोड़ा सा ही किताब की तरफ देखें और अपनी निगाह दर्शनों पर ही रखें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

हथ कार वन्नी, दिल यार वन्नी।

हाँ भई, प्रेमियों के सवाल बहुत अच्छे थे। परमात्मा सावन–कृपाल को याद करके दिल बहुत खुश हुआ। मैं ज्यादातर आप बीती सादे लफ़्ज़ों में ही बताया करता हूँ। महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे, ''जिसने दो लफ़्ज़ों में बात समझनी है वह मेरे पास आए और जिसने ज्यादा लफ़्ज़ों में समझना है वह कृपाल सिंह के पास जाए। कृपाल सिंह पहले गन को खोलता है फिर जोड़ता है।''

मुझे इन दोनों महापुरुषों के चरणों में बैठकर जो प्यार मिला है, मैं वही प्यार आपके साथ बाँट रहा हूँ। मेरे दिल और दिमाग में उनकी बहुत याद भरी हुई है। जैसे खींचने से स्प्रिंग तन जाता है और ढीला छोड़ने से अपनी जगह आ जाता है इसी तरह मैं जब भी उनकी बात करता हूँ तो मुझे बहुत शान्ति मिलती है। उनके संपर्क में बैठकर जो बातें हुई उन बातों को याद करके ही मैं आपको बताया करता हूँ।

महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी को ज्यादातर बाऊजी या मौलवी कहा करते थे। सिकन्दरपुर का वाक्या है शादी होनी थी और महाराज कृपाल का इंतजार हो रहा था। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''हमारे मौलवी को तो आ जाने दो।''

एक प्रेमीः– *हम लोग कुछ दिनों के लिए आपके पास आए हुए हैं। क्या हमारी यह पवित्र यात्रा सच्चखंड पहुँचने का छोटा सा रूप है?*

बाबा जीः – हाँ भई, गुरु अर्जनदेव जी परमात्मा को याद करते हुए कहते हैं, ''हे परमात्मा, मैं नहीं जानता कि आप मेरे लिए क्या कर रहे हैं लेकिन आपने जिस पहुँची हुई आत्मा से मुझे मिलवाया है, उसकी वजह

से ही मैं आप तक पहुँच सका।'' जब यह आत्मा सच्चखंड पहुँचती है तो इसे अहसास होता है कि मैं गुरु की वजह से ही परमपिता परमात्मा से मिल सकी हूँ। गुरु अर्जनदेव जी फिर कहते हैं, ''हे मेरे सतगुरु, मेरे परमात्मा, मुझमें कोई गुण नहीं है। मैं आपकी दया से ही आपके दरवाजे तक पहुँच सका हूँ और आपकी दया-मेहर से ही आपके चरणों में हूँ।'' जब परमात्मा जीव पर दया करते हैं तो उसका मिलाप सन्त-सतगुरु से करवाते हैं ताकि यह आत्मा परमात्मा से मिल सके।

जब हम सतगुरु से मिलते हैं तो सतगुरु हमें 'शब्द-नाम' का दान देकर हमसे भजन-अभ्यास करवाते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि परमात्मा ने हम पर दया की जो हम इस पवित्र यात्रा पर आ सके, हमने इस पवित्र यात्रा में सिर्फ परमात्मा को ही याद करना है। काल ने दुनिया को अपने जाल में फँसा रखा है, इस युग में परमात्मा की तरफ आना बहुत मुश्किल है।

हमारी हालत उस छोटे बच्चे की तरह है जो अभी चलना सीख रहा है। वह गिरता है, चलने की कोशिश करता है फिर गिर जाता है और रोने लगता है। जब माता-पिता देखते हैं कि उनका बच्चा बहुत कोशिश करने के बाद भी किसी जगह नहीं पहुँच पा रहा तो वे उसे अपनी बाँहों में उठाकर उस जगह पहुँचा देते हैं, जहाँ वह पहुँचना चाहता है।

इसी तरह जब हम सिमरन करते हैं, भजन पर बैठते हैं लेकिन भजन नहीं बनता तो हम रोते हुए गुरु के आगे प्रार्थनाएं करने लगते हैं। गुरु देखते हैं कि हम चलने की पूरी कोशिश कर रहे हैं लेकिन हम उन तक नहीं पहुँच पा रहे तो वह हमारी मदद करते हैं, हमें अपनी गोद में लेकर उस जगह पहुँचाते हैं जहाँ हमारी आत्मा को पहुँचना चाहिए।

अगर हम नामदान मिलने के बाद परमार्थ के रास्ते पर चलते रहें और गुरु के कहे अनुसार उसी जोश के साथ भजन-सिमरन करते रहें तो हम

सिर्फ अपनी ही नहीं और भी सैंकड़ो आत्माओं को मुक्ति दिला सकते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जैसी लव पहिले लगी, तैसी निबहै ओर।
अपनी देह की को गिनै, तारै पुरुष करोर।।

सभी सतसंगी जानते हैं कि मन हमें किस तरह नचाता है। यह मन हमें कुछ समय भजन–सिमरन करने देता है फिर सिमरन से दूर कर देता है। हम फिर अपने आपको भजन–सिमरन के लिए तैयार करते हैं और करीब दस दिन लगातार भजन–सिमरन पर बैठते हैं लेकिन यह मन हमें फिर सिमरन से दूर करके खुश्क कर देता है।

जब किसी प्रेमी को नामदान मिल जाता है तब उसे अपने मन की बात सुननी बन्द कर देनी चाहिए अगर वह मन की बात मानेगा तो अपने लिए बड़ी मुश्किल खड़ी कर लेगा। आपका मन आपके साथ है लेकिन आपने उसकी बात नहीं माननी अगर आप उसकी बात मानेंगे तो आज का भजन–सिमरन कल पर डाल देंगे। यही मन कल भी आपके साथ होगा और आपको भजन–सिमरन नहीं करने देगा। प्रेमी सतसंगी को पूरी ताकत के साथ अपने मन से लड़ना होगा तभी वह भजन–सिमरन कर सकेगा।

अगर हम कोई दुकान चला रहे हैं तो हम दस दिन के लिए दुकान बंद नहीं कर सकते, ऐसा करने से हमारा व्यापार बंद हो जाएगा और हमें बहुत नुकसान होगा। अगर हम कोई नौकरी कर रहे हैं तो हम दस दिन के लिए वहाँ से गैरहाजिर नहीं हो सकते क्योंकि ऐसा करने से हमारा मालिक हमें नौकरी से निकाल देगा। हमें हमेशा दुनिया के धंधों की चिन्ता लगी रहती है। क्या हमने कभी अपने भजन–सिमरन की तरफ ध्यान दिया है कि हम अपना कितना बड़ा नुकसान कर रहे हैं? अगर हम भजन–सिमरन नहीं करते तो सतगुरु की दया प्राप्त नहीं कर सकते। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया गया संदेश

भजन गाना भी अभ्यास से कम नहीं होता

मार्च 1997 साँपला–हरियाणा

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश और भक्ति करने का मौका दिया है। गुरु अर्जन देव जी महाराज ने बहुत प्यार भरे लहजे से कहा है कि वह जुबान काट दें जो गुरु का यश नहीं करती, वह कान बंद कर दें जो गुरु के दिए हुए नाद और शब्द को नहीं सुनते, वह आंखें बंद कर दें जो सतगुरु के स्वरूप की चोर हैं और उनका दर्शन करके खुश नहीं होती। सच तो यह है कि अगर करन–कारन परमात्मा हम पर कृपा और दया करें तो ही हम उनके प्यार और तड़प के गीत गा सकते हैं।

मैं भजन गाने के बारे में बहुत कुछ बता चुका हूँ, प्रेमियों ने मैगजीन में भी पढ़ा है कि भजन गाने कितने जरूरी होते हैं। प्यारेयो, **भजन गाना भी अभ्यास से कम नहीं होता।** महाराज कृपाल कहा करते थे कि अभ्यास पर बैठने से पहले आप ऐसा शब्द बोलें जो आपकी आत्मा में तड़प पैदा करे। गुरु के आगे भजन गाना नम्रता जाहिर करने का अच्छा मौका होता है। हम अपनी एक–एक बुराई गुरु के आगे बताते हैं, नहीं तो हमारा भूला–भटका मन कहाँ मानता है कि मैंने कोई गुनाह या ऐब किया है।

जब हम सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करके पूरी तरह से आंखों के पीछे एकाग्र हो जाते हैं और आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर उस जगह पहुँच जाते हैं जहां से गुरु पावर आई हुई है। सच्ची नम्रता, सच्ची आजिजी और गुरु से सच्चा प्यार उस जगह जाकर ही पैदा होता है। उससे नीचे–नीचे हम सन्तों की लिखी हुई प्रार्थनाएँ बोलते हैं क्योंकि सन्त–महात्मा हम जीवों की कमजोरी को अच्छी तरह जानते हैं। उनकी पवित्र आत्मा से

शब्दों के रूप में जो कल्पना उठी होती है, वह उनकी सच्ची तड़प और सच्ची नम्रता होती है अगर हम अपने जीवन को उनके मुताबिक ढालें तो हम उन प्रार्थनाओं से भी फायदा उठा सकते हैं।

आम लोग जो कविता लिखते हैं, वह मन–बुद्धि की कल्पना होती है। हम उतने पवित्र नहीं होते जितनी हम कल्पना करते हैं। वह कल्पना काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से गंदे हुए हृदय से आती है। हमें हमेशा परम गति को प्राप्त हुए सन्तों की प्रार्थना से फायदा उठाना चाहिए क्योंकि उन्होंने अंदर गुरु–पावर को देखकर, गुरु पावर में मिलकर ही कविता लिखी होती है। अगर हम खुश्क लोगों की कविता पढ़ेंगे तो हम भी खुश्क हो जाएंगे और हमारे ऊपर भी वैसा ही असर हो जाएगा।

आपको पता है कि जिस दिन प्रेमी आते हैं उस दिन हम सब मिलकर भजन बोलते हैं। आज आपकी भजन बोलने की बारी है। जिसे भजन गाने की इजाजत मिल जाती है वह पन्ना नंबर जरूर बोले ताकि दूसरे प्रेमियों को भजन ढूंढना आसान हो जाए।

तूँ मेरा पिता, तूँ है मेरा माता, तूँ मेरा बंधप, तूँ मेरा भ्राता, (2)
तूँ मेरा राखा सबनी थांई, तां भौ केहा काड़ा जीओ, तूँ मेरा .....

1. तुमरी कृपा ते तुध पछाणा, तूँ मेरी ओट तूँ है मेरा माणा, (2)
तुझ बिन दूजा अवर न कोई, सब तेरा खेल अखाड़ा जीओ, तूँ मेरा .....

2. जीया जंत सब तुध उपाए, जित–जित भाणा तित्त–तित्त लाए, (2)
सब किछ कीता तेरा होवै, नाहीं किछ असाड़ा जीओ, तूँ मेरा .....

3. नाम ध्याये महासुख पाया, हर गुण गाए मेरा मन सितलाया, (2)
गुरु पूरै वजी वधाई, 'नानक' जीता बिखाड़ा जीओ, तूँ मेरा .....

परमपिता कृपाल का धन्यवाद है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। आप सबके भजन बहुत प्यारे और मीठे थे। आज जिन प्रेमियों को भजन गाने का मौका नहीं मिला, जिस दिन फिर भजन गाने की बारी आएगी, उन्हें उस दिन मौका दिया जाएगा। ✻✻✻

किड्स कॉर्नर एकलव्य की गुरु भक्ति

महाराज सावन सिंह जी महाभारत के समय की एक कहानी सुनाया करते थे कि उस समय एकलव्य नाम का एक गरीब लड़का था। उसे तीरंदाजी सीखने का बहुत शौक था, वह द्रोणाचार्य को अपना गुरु बनाना चाहता था और उनसे तीरंदाजी सीखाना चाहता था लेकिन द्रोणाचार्य कौरवों और पांडवों जैसे राजकुमारों के गुरु थे। द्रोणाचार्य ने एकलव्य को गरीब समझकर अपना शिष्य बनाने से मना कर दिया।

प्यार प्यार ही होता है। जब द्रोणाचार्य ने एकलव्य को अपना शिष्य बनाने से मना कर दिया तो उसने वापिस आकर अपनी झोंपड़ी में द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाई। एकलव्य रोज उस मूर्ति के सामने बैठकर द्रोणाचार्य को याद करता, द्रोणाचार्य ने उसे अंदर ही वह सब सिखा दिया जो वे राजकुमारों को सिखाते थे।

एकलव्य ने बहुत मेहनत और लगन से अभ्यास किया जिससे वह द्रोणाचार्य के मना करने पर भी उन्हें अपना गुरु बना सका, उन्हें अंदर देखकर उनसे सीख सका। असलियत में द्रोणाचार्य अंदर नहीं जाते थे अगर वे अंदर जाते तो वहाँ भी उसे तीरंदाजी सिखाने से मना कर देते।

एक दिन द्रोणाचार्य अपने राजकुमार शिष्यों के साथ नदी किनारे टहल रहे थे। तभी एक हिरन उनके सामने से निकला, उस हिरन के मुँह में एक तीर लगा हुआ था जिससे उसका मुँह बंद हो गया था हालाँकि हिरन अभी जिंदा था। सभी हैरान थे कि इस तरह से हिरन को तीर किसने मारा है। यह सब देखकर अर्जुन ने द्रोणाचार्य से कहा, ''गुरु जी, आप हमेशा कहा करते थे कि मैं आपका सबसे होनहार शिष्य हूँ, मेरे जैसी तीरंदाजी कोई नहीं कर सकता लेकिन जिस तरह से इस हिरन को तीर मारा गया है, ऐसा तो आपने मुझे कभी नहीं सिखाया।''

द्रोणाचार्य और सभी शिष्य यहाँ–वहाँ देखने लगे कि किसने ऐसा तीर चलाया है। एकलव्य झाड़ियों के पीछे छिपा हुआ था, वह बाहर आ गया। एकलव्य बोला, ''यह तीर मैंने मारा है।'' द्रोणाचार्य ने उससे पूछा, ''तुम्हारा गुरु कौन है, तुमने यह सब किससे सीखा है?''

एकलव्य उन सबको अपनी झोंपड़ी में ले गया और द्रोणाचार्य की मूर्ति दिखाई। द्रोणाचार्य ने उससे पूछा कि मैंने तुम्हें यह सब कब सिखाया है? उसने जवाब दिया, ''आपने मुझे तीरंदाजी सिखाने से मना कर दिया था लेकिन मेरी सीखने की बहुत इच्छा थी इसलिए मैंने अपनी झोंपड़ी में आपकी मूर्ति बनाई, मैं रोज इस मूर्ति के सामने एक–दो घंटे बैठकर आपको याद करता था और आपने अंदर ही मुझे यह सब सिखा दिया।''

अब द्रोणाचार्य तो अंदर नहीं जाते थे वे सच्चे शिष्य को कैसे पहचानते। द्रोणाचार्य अर्जुन को अपना सबसे अच्छा शिष्य मानते थे इसलिए वे नहीं चाहते थे कि एकलव्य अर्जुन से बेहतर तीरंदाज बने। उन्होंने एकलव्य को रोकने के लिए उससे कहा, ''तुमने मुझे गुरु तो बना लिया लेकिन गुरु दक्षिणा दी ही नहीं।'' एकलव्य बोला, ''गुरु जी, आपको जो चाहिए मैं आपको दूँगा।'' द्रोणाचार्य ने कहा, ''तुम अपने दाहिने हाथ का अंगूठा काट कर मुझे दो, यही मेरी गुरु दक्षिणा है।'' एकलव्य सच्चा शिष्य था, उसने उसी समय अपना अंगूठा काटकर उन्हें दे दिया।

हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है कि एकलव्य ने द्रोणाचार्य को अपना गुरु मान लिया, उन्हें सच्चे मन से याद किया, अभ्यास किया और उनसे तीरंदाजी सीखी।

इसी तरह अगर हम भी अपने गुरु को सच्चे मन से याद करते हैं तो वे हमें अंदर दर्शन देते हैं और हमारी रक्षा करते हैं। हम बड़ों के लिए यह सीख है कि गुरु का पूर्ण होना कितना जरूरी है अगर गुरु पूरा नहीं तो हमें एकलव्य जैसा अच्छा शिष्य बनकर भी नुकसान उठाना पड़ता है। ***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

जब किसी प्रेमी को नामदान मिल जाता है तब उसे अपने मन की बात सुननी बन्द कर देनी चाहिए अगर वह मन की बात मानेगा तो अपने लिए बड़ी मुश्किल खड़ी कर लेगा। आपका मन आपके साथ है लेकिन आपने उसकी बात नहीं माननी अगर आप उसकी बात मानेंगे तो आज का भजन–सिमरन कल पर डाल देंगे। यही मन कल भी आपके साथ होगा और आपको भजन–सिमरन नहीं करने देगा। प्रेमी सतसंगी को पूरी ताकत के साथ अपने मन से लड़ना होगा तभी वह भजन–सिमरन कर सकेगा।